म्राकुश्चितात्तिगाउं यत्सस्वनं मधुरं तथा। कालागतं सास्यरागं तदै विक्सितं भवेत्॥

Str. 298, 58. म्रतिन्हास = निर्त्तर्हास = मनविच्छ्नहास = म्रित-शयेन हास, die Scholien.

Str. 301, 71. Schol. स्वपनाद्राजपुरादेश्विश्व गृक्स्थिताद्वयम्

Str. 302, 73. Schol. स्वराष्ट्राचीराटविकादिभयं परराष्ट्राद्वाक्तिया-दिभयं स दृष्टम्

Str. 303, 76. तुगुप्सा = चित्तसंकोचन, die Scholien.

Str. 306, 86. Calc. Ausg. und D. उद्धर्पणम्, die Scholien: उद्धपत्युच्क्सत्यनेनाङ्गम् उद्धपणम् (sic) — Calc. Ausg. उद्यसनकम्, D. उद्यसकतम्, die Scholien: उद्युक्सत्यनेनाङ्गम् उद्युक्सनम्, eine Randglosse:
चतुराग्रस्वरे। ४ पम् — 87. Die Scholien: स्वरे। प्यातस्य नामैकम् कद्यतमव्यक्ततं स्वरे स्वरिवषये (Calc. Ausg. und D. स्वर्कम्पस्तु)।

Str. 307, 90. Calc. Ausg. und D. च st. म्रथ । — 91. Calc. Ausg. und E. म्रस्म, die Scholien : म्रस्पते प्रसम् — Calc. Ausg. म्रश्न, B. म्रस्तु, die Scholien : म्रस्पते प्रसु, eine Randglosse : म्राय म्राश्रुशब्दस्तालव्यो - पपञ्चमस्वरातः । म्रश्नं (sic) दत्त्यरेपादिस्वरातः । म्रस्तु (sic) दत्त्यरेपपञ्च- मस्वरातः । त्रयो प्रयोत म्रायस्वराताः (1. म्रायस्वरायाः)।

Str. 308, 96. Schol. चेतनं चेतना ।

Str. 309, 98. Calc. Ausg. सेमुखी, die Scholien: शेत इति शेर्मीक्:। त: (l. तं) मुज्ञातीति शेमुषी. Eine Randglosse:

मित्रागामिका ज्ञेषा बुद्धिस्तत्कालदृर्शिनी । ज्ञानिक प्रज्ञा चातीतकालस्य मेधा कालत्रयात्मिका ॥ इत्यन्ये भिन्द्ति ।